भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड–XXVIII अंक–20 31 अक्टूबर 2023

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्व प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।।

मैं सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति का कारण हूँ और मुझसे ही सब जगत् चेष्टा करता है, इस प्रकार समझकर श्रद्धा और भक्ति से युक्त बुद्धिमान भक्तजन मुझे परमेश्वर को ही निरन्तर भजते हैं। **श्रीमद्भगवद्गीता 10/8**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2023/201150 दिनांक 11.10.2023 के अनुसार **प्रो. अवनिश पाण्डेय** ने 03.10.2023 से संस्थान के ऑप्टिक एवं फोटोनिक केन्द्र में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-I) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. अवनिश पाण्डेय को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/207125 दिनांक 19.10.2023 के अनुसार **प्रो. संकल्प नांबियार** ने 16.10.2023 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-I) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. संकल्प नांबियार को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2023/207139 दिनांक 19.10.2023 के अनुसार **प्रो. रीताब्रत ठाकुर** ने 16.10.2023 से संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. रीताब्रत ठाकुर को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/206454 दिनांक 25.10.2023 के अनुसार **प्रो. केशव भारद्वाज रवि** ने 18.10.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. केशव भारद्वाज रवि को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/208337 दिनांक 25.10.2023 के अनुसार **प्रो. साहिल गर्ग** ने 19.10.2023 से संस्थान के सिविल इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. साहिल गर्ग को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2023/208779 दिनांक 26.10.2023 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) सपना थापर** ने 16.10.2023 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय/स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 अक्टूबर, 2023 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

प्रो. रवि शंकर, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग

प्रो. रवि शंकर ने 15.07.1997 को संस्थान में सह प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 31.07.2002 में आपको सह प्रोफेसर तथा 26.10.2006 को प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया।

प्रो. रविशंकर ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपने वर्ष 1989 से 1996 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के रसायन विज्ञान विभाग में अनुसंधान और शिक्षण दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपके शैक्षणिक प्रयास उल्लेखनीय रूप से सफल रहे हैं और आपके मार्गदर्शन में रसायन विज्ञान विभाग में 28 विद्यार्थियों ने अपनी पीएच.डी. पूर्ण की है। इनमें से कई विद्यार्थी भारत और विदेशों में अपने करियर में सफलता हासिल कर चुके हैं। आपका प्रेरणादायक दृष्टिकोण इन सभी विद्यार्थियों के विकास में सहायक रहा।

मित्तभाषी स्वभाव के प्रो. रवि शंकर अपने संकाय साथियों, स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रहे हैं।

प्रो. (सुश्री) पूर्णिमा सिंह, प्रोफेसर, मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

प्रो. (सुश्री) पूर्णिमा सिंह ने 01.07.2005 को संस्थान में सह प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 03.12.2010 में आपको प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया। 2019 में आपको इंस्टिट्यूट चेयर प्रोफेसर तथा प्रोफेसर (HAG) प्रदान किया गया।

फरवरी 2018 से अगस्त 2020 तक आप मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग की अध्यक्ष रही तथा सितम्बर 2021 से अक्टूबर 2023 तक आपने NRCVEE की अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। संस्थान में कार्यभार ग्रहण करने से पहले आपने 1985 से सेन्टर फॉर एडवांस्ड स्टडी, मनोविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में शिक्षण का कार्य किया तथा इण्डियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन द्वारा 1986 में आपको युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से नवाजा गया। इसके बाद आपको कामनवेल्थ एसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटीज द्वारा कामनवेल्थ अकेडमिक स्टाफ फेलोशिप प्रदान की गई तथा 1991-1992 तक आप ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी, ब्रिस्टल, यूनाइटेड किंगडम में रही।

आप राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मनोविज्ञान अकादमिक एवं व्यावसायिक संघो में सक्रिय रूप से शामिल रही हैं। आपकी प्रमुख अनुसंधान रुचियों में सामाजिक एवं व्यवहारिक सामाजिक मनोविज्ञान संगठनात्मक व्यवहार एवं क्रॉस–सांस्कृतिक मनोविज्ञान शामिल हैं और आप अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्रो के अन्तरराष्ट्रीय संघों में सक्रिय हैं।

आपने 2014 से 2022 तक इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ क्रॉस–कल्चर साइकोलॉजी की कार्यकारी समिति में दक्षिण एशिया का प्रतिनिधित्व किया। 2007 से 2015 तक आप दक्षिण एशिया का प्रतिनिधित्व करते हुए एशियन एसोसिएशॅन ऑफ सोशल साइकोलॉजी की कार्यकारी समिति की सदस्य रही। 2018 में आपको नेशनल एकेडमी ऑफ साइकोलॉजी, भारत का फेलो चुना गया था। इससे पहले आप 2014-2015 तक नेशनल एकेडमी ऑफ साइकोलॉजी (NAOP) इण्डिया की अध्यक्ष तथा 2006-2012 तक NAOP की कोषाध्यक्ष रही।

आप कई अन्तरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय पत्रिकाओं के सम्पादकीय बोर्ड में रही हैं। 1989-2011 तक आप सेज द्वारा प्रकाशित पत्रिका–'साइकोलॉजी ऐन्ड डेवलपिंग सोसाइटीज' की सहायक सम्पादक तथा सह सम्पादक रही। 2009-2019 तक आप स्प्रिंगर द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'साइकोलॉजिकल स्टडीज' की सह सम्पादक भी रही। 2020 से अभी तक आप 'साइकोलॉजिकल स्टडीज' पत्रिका की प्रमुख सम्पादक हैं।

आप मनोविज्ञान की अग्रणी पत्रिका 'इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी' (2014 से अभी तक) सहित कई अकादमिक पत्रिकाओं के सम्पादकीय बोर्ड में भी रही हैं।

आपने मनोविज्ञान की अन्तरराष्ट्रीय कांग्रेसों तथा राष्ट्रीय स्तर पर कई मंचों पर आमंत्रित व्याख्यान दिए तथा आमंत्रित संगोष्ठियां आयोजित की हैं। आप DST, ICSSR, नाफिल्ड फाउंडेशन, इण्डिया स्टडीज रिसर्च ग्रान्ट, वेलिंगटन यूनिवर्सिटी, न्यूजीलैंण्ड तथा टेम्पलटन फाउन्डेशन द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं की प्रमुख अन्वेषक एवं सह अन्वेषक रही हैं। तीन दशकों से अधिक के अपने शोध में आपने सामाजिक संगठनात्मक सन्दर्भों, अन्तर समूह संबंधों एवं पहचान संबंधी मुद्दों, अनुष्ठानों में भागीदारी तथा मनोविज्ञान एवं सामाजिक कल्याण पर इसके प्रभाव तथा कैसे संरचनात्मक तथा सामाजिक सन्दर्भ छात्रों की शैक्षणिक प्रभावकारिता को प्रभावित करते हैं, इस वितरणात्मक एवं प्रक्रियात्मक न्याय की धारणाओं का पता लगाया है।

विनम्र स्वभाव के प्रो. पूर्णिमा सिंह अपने संकाय साथियों, स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रही हैं।

श्री महेश कुमार गुलाटी (26452), संयुक्त कुलसचिव

श्री महेश कुमार गुलाटी ने 21.04.1999 को संस्थान में सहायक कुलसचिव के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 01.08.2007 में आपको उप कुलसचिव (लेखा) के रूप में नियुक्त किया गया। 01.08.2012 में आपको वेतन बैण्ड–4 ग्रेड वेतन 8700/–रु में नियोजित किया गया। 01.10.2014 में आपको संयुक्त कुलसचिव के रूप में पुनर्पदनामित किया गया। 01.08.2017

को आर. ऐन्ड पी.आर.एस. के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। आपने लेखा, लेखा परीक्षा, विधि, शिकायत मामले एवं सर्तकता आदि अनेकों अनुभागों में अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। सौम्य एवं मृदु स्वभाव के श्री महेश कुमार गुलाटी एक सजग, कर्तव्यनिष्ठ एवं मेहनती संयुक्त कुलसचिव रहे हैं।

श्री इन्द्रजीत (50077), अटेन्डेन्ट, स्थापना अनुभाग-II

श्री इन्द्रजीत ने 20.01.1986 को संस्थान में क्लास-IV के रूप में वेतनमान 750-940/–रु. में कार्यभार ग्रहण किया था। 01.02.1992 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको वेतनमान 800-1150/2600-4000/–रु. में चयनित किया गया। 01.02.2002 में आपको एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत 3050-4590/–रु. के वेतनमान में उन्नयन दिया गया तथा 01.02.2012 में इसी योजना के अन्तर्गत आपको ग्रेड वेतन 2000/–रु. में उन्नयन दिया गया। 20.01.2016 को भर्ती नियमों के अन्तर्गत आपको लेवल–4 मे उन्नयन दिया गया। श्री इन्द्रजीत सिंह एक योग्य एवं कर्मठ अटेन्डेन्ट हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय/स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

सर्वश्रेष्ठ स्पोर्ट्सपर्सन छात्रवृत्ति

छात्र कार्य अनुभाग से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/SAS/76/ (BSP)2023/ISTA-207403 दिनांक 20.10.2023 के अनुसार कैलाश छात्रावास की सुश्री निवेदिता शुक्ला (प्रविष्टि सं.2020MS10758) को वर्ष 2022 के लिए सर्वश्रेष्ठ स्पोर्ट्सपर्सन छात्रवृत्ति के लिए अनुमोदित किया गया है। इस छात्रवृत्ति में 15,000/–रु. की राशि प्रदान की जाती है। जो 10 महीनों के लिए 15,00/–रु. प्रतिमाह की दर से होगी।

पुनर्नियुक्ति

- **प्रो. रवि शंकर** (रसायन विज्ञान विभाग) को संस्थान संविधि के पैरा 13(2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात 30.06.2024 तक के लिए रसायन विज्ञान विज्ञान विभाग में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।
- **प्रो. (सुश्री) पूर्णिमा सिंह** (मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग) को संस्थान संविधि के पैरा 13(2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात 30.06.2024 तक के लिए मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।

हार की जीत

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवत–भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे सुलतान कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख–देखकर प्रसन्न होते थे। ऐसे लगन, ऐसे प्यार, ऐसे स्नेह से कोई सच्चा प्रेमी अपने प्यारे को भी न चाहता होगा। उन्होंने अपना सब–कुछ छोड़ दिया था, रुपया, माल, असबाब, जमीन, यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे–से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। परंतु सुलतान से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। मैं इसके बिना नहीं रह सकूँगा, उन्हें ऐसी भ्रांति–सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ऐसे चलता है जैसे मोर घन–घटा को देखकर नाच रहा हो। गाँव के लोग इस प्रेम को देखकर चकित थे, कभी–कभी कनखियों से इशारे भी करते थे, परंतु बाबा भारती को इसकी परवा न थी। जब तक संध्या–समय सुलतान पर चढ़कर आठ–दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते–होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा, खड्गसिंह, क्या हाल है?

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, आपकी दया है।

कहो, इधर कैसे आ गए?

सुलतान की चाह खींच लाई।

विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।

मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।

उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी!

कहते हैं देखने में भी बहुत सुंदर है।

क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।

बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।

बाबा और खड्गसिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सैकड़ों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की–सी अधीरता से बोला, परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?

बाबा जी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाए और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचककर सवार हो गए। घोड़ा वायु–वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर, उसकी गति देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह

डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर अपनी अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी भी। जाते–जाते उसने कहा, बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की तरह ही मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को, और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आई, ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामाँवाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।

वहाँ तुम्हारा कौन है?

दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे–धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका–सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड्गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, जरा ठहर जाओ।

खड्गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।

परंतु एक बात सुनते जाओ।

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।

बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।

अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, बाबाजी, इसमें आपको क्या डर है?

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वो किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।

और यह कहते–कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही न रहा हो। बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की तरह खिल जाता था। कहते थे, इसके बिना मैं रह न सकूँगा। इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन–भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। उन्होंने अपनी निज की हानि को मनुष्यत्व की हानि पर न्योछावर कर दिया। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश पर तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँव के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे–धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक किसी वियोगी की आँखों की तरह चौपट खुला था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। हानि ने उन्हें हानि की तरफ से बे–परवाह कर दिया था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

अंधकार में रात्रि ने तीसरा पहर समाप्त किया, और चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन–मन–भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती दौड़ते हुए अंदर घुसे, और अपने घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, जैसे बिछुड़ा हुआ पिता चिरकाल के पश्चात् पुत्र से मिलकर रोता है। बार–बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार–बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते और कहते थे "अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा"।

थोड़ी देर के बाद जब वह अस्तबल से बाहर निकले, तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। ये आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्गसिंह खड़ा रोया था।

दोनों के आँसुओं का उसी भूमि की मिट्टी पर परस्पर मिलाप हो गया।

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com